09 July 2018
Monday • WK 28 (190-175)

मनोवृत्ति की विशेषताएँ
Characteristics of Attitudes

मनोवृत्ति की अवधारणा को और अधिक स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है कि इनकी मूलभूत विशेषताओं को समझने का प्रयत्न किया जाय। विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विवेचन के आधार पर मनोवृत्ति से सम्बन्धित प्रमुख विशेषताओं को निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है:—

(1) **मनोवृत्तियाँ अर्जित होती हैं** (Attitudes are acquired) → मनोवृत्तियों की प्रमुख विशेषता यह है कि यह जन्मजात न होकर समाज में विकसित और अर्जित की जाती है। व्यक्ति सामाजिक सीख, व्यक्तिगत अनुभवों अथवा कुछ विशेष परिस्थितियों में किसी वस्तु या व्यक्ति के सम्बन्ध में कुछ विशेष मनोवृत्तियाँ विकसित करता है। ~~इसरे शब्दों में~~ यह वह विशेषता है कि जिसके आधार पर मनोवृत्ति को जैविक प्रेरणाओं से पृथक् किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, भूख की अवस्था में भोजन की इच्छा एक जैविक प्रेरणा है लेकिन किस तरह के भोजन द्वारा इस इच्छा की पूर्ति की जाय, यह व्यक्ति के द्वारा अर्जित मनोवृत्ति पर निर्भर होगा।

(2) **मनोवृत्तियाँ बहुत-कुछ स्थायी होती हैं** (Attitudes are relatively permanent) → एक बार किसी तथ्य के प्रति मनोवृत्ति का निर्माण हो जाने के बाद वह तुलनात्मक रूप से एक स्थायी रूप ग्रहण कर लेती है। इसी कारण इसमें निरन्तरता का तत्व स्पष्ट होने लगता है। इसके बाद भी यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मनोवृत्तियों की स्थिरता आंशिक तथा तुलनात्मक ही होती है, पूर्ण नहीं। मनोवृत्तियाँ क्योंकि अर्जित की जाती हैं, इसलिए यह अपरिवर्तनशील नहीं है। सामान्यतः व्यक्ति बचपन में ही जिस मनोवृत्ति को सीख लेता है,

July 2018
Su Mo Tu We Th Fr Sa
1 2 3 4 5 6 7
15 16 17 18 19 20 21
29 30 31

यह लम्बे समय तक स्थायी बनी रहती है। व्यक्ति के अनुभवों और परिस्थितियों में परिवर्तन होने के बाद ही किसी मनोवृत्ति में परिवर्तन की सम्भावना हो सकती है।

(3) मनोवृत्ति की एक दिशा होती है (Attitude has a direction)→ सामान्यतया किसी विशेष तथ्य या व्यक्ति के बारे में मनोवृत्ति या तो सकारात्मक होती है अथवा नकारात्मक। इसी को हम अनुकूल और प्रतिकूल मनोवृत्ति भी कहते हैं। किसी तथ्य के बारे में यह मनोवृत्ति चाहे अनुकूल हो अथवा प्रतिकूल, एक बार इनका निर्माण हो जाने के बाद यह एक ही दिशा में आगे बढ़ती रहती है। इसके बाद भी अनुकूलता या प्रतिकूलता की यह मात्रा भावना के स्तर या व्यवहार के स्तर पर एक-दूसरे से कुछ पृथक् भी हो सकती है। उदाहरण के लिए एक कट्टर ब्राह्मण अपने परम्परागत संस्कारों के प्रभाव से भावना के स्तर पर हरिजनों के लिये प्रतिकूल मनोवृत्तियाँ रख सकता है लेकिन सम्भव है कि व्यवहार के स्तर पर वह कार्यालय में उनके साथ काम करने में संकोच न करे।

(4) मनोवृत्तियाँ इसके धारक तथा विषय के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट करती हैं (Attitude imply a subject-object relationship)→ प्रत्येक मनोवृत्ति का निर्माण किसी विषय तथा इसके धारक के परस्पर सम्बन्ध से होता है। जिस व्यक्ति में मनोवृत्ति का निर्माण और विकास होता है, वह मनोवृत्ति का आधार होता है जबकि जिस व्यक्ति, वस्तु घटना अथवा समूह के बारे में मनोवृत्ति विकसित होती है उसे विषय कहा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि मनोवृत्ति कोई आन्तरिक कारक नहीं है बल्कि इसे पर्यावरण के सम्बन्धों की सहायता से ही

August 2018
Su Mo Tu We Th Fr Sa
1 2 3 4
5 6 7 8 9 10 11
12 13 14 15 16 17 18
19 20 21 22 23 24 25
26 27 28 29 30 31

समझा जा सकता है।

(5) मनोवृत्ति में प्रेरणात्मक गुण होता है (Attitude have a motivational attribute)→ व्यक्ति किसी वस्तु अथवा अन्य व्यक्ति के प्रति जो भी क्रिया या व्यवहार करता है, वह किसी न किसी रूप में उसकी एक विशेष मनोवृत्ति से ही प्रभावित होती है। यदि हम अपने मित्र के प्रति कोई अनुकूल व्यवहार करते हैं तो यह हमारी सकारात्मक मनोवृत्ति से प्रभावित होता है। दूसरी और नकारात्मक मनोवृत्तियाँ अपने विरोधियों अथवा शत्रुओं के प्रति हमें प्रतिकूल व्यवहार करने की प्रेरणा देती है। इसके बाद भी यह ध्यान रखना आवश्यक है कि व्यक्ति के वास्तविक व्यवहार पूर्णतया उसकी मनोवृत्ति के अनुरूप नहीं होती। शिक्षा, प्रशिक्षण तथा व्यवहार-कुशलता द्वारा मनोवृत्ति के प्रभाव को कम करके भी व्यवहार किया जा सकता है।

(6) मनोवृत्तियाँ वैयक्तिक भी होती है और सामाजिक भी (Attitude are both individual and social)→ मनोवृत्ति का सम्बन्ध केवल व्यक्ति से नहीं होता बल्कि समूह की भी अपनी मनोवृत्ति अथवा मनोवृत्तियाँ हो सकती है। व्यक्तिगत मनोवृत्तियाँ व्यक्तियों की सीख तथा अनुभवों की भिन्नता के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकती हैं लेकिन समूह-मनोवृत्ति पर पर्यावरण का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। उदाहरण के लिए विश्व हिन्दू परिषद की हिन्दू राष्ट्रवादिता से सम्बन्धित मनोवृत्ति में कठिनता से ही कोई परिवर्तन होगा, चाहे इससे सम्बन्धित व्यक्ति संसार के किसी भी भाग में क्यों न रहता हो।

(7) मनोवृत्तियों में सामंजस्य होता है (consonance characteristics in attitude)→

July 2018
Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We Th Fr Sa
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14
15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
29 30 31

वास्तविकता यह है कि व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मानसिक अथवा व्यवहार के स्तर पर इतने अधिक लोगों के सम्पर्क में आता है कि विभिन्न व्यक्तियों, वर्गों तथा परिस्थितियों के प्रति उसकी मनोवृत्तियों की कोई संख्या निर्धारित नहीं की जा सकती। इस स्थिति में सामान्यीकरण के आधार पर सभी मनोवृत्तियों को कुछ भागों में विभाजित करके ही उन्हें समझा जा सकता है। ऐसे प्रत्येक वर्ग को हम मनोवृत्ति का एक-एक गुच्छा कह सकते हैं। ऐसा प्रत्येक गुच्छा अनुरूपता के गुण को प्रदर्शित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि व्यक्ति की मनोवृत्तियाँ सहनशीलता, धैर्य, स्नेह और परिश्रम से प्रभावित हैं तो जीवन के अधिकांश क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यक्तियों के प्रति उसकी मनोवृत्तियाँ इन्हीं गुणों से प्रभावित होंगी। दूसरी ओर यदि एक व्यक्ति के स्वभाव में कठोरता, घृणा तथा स्वार्थ की प्रधानता है तो अधिकांश व्यक्तियों और दशाओं के प्रति उसकी मनोवृत्तियाँ प्रतिकूल हो सकती हैं। इसी को हम मनोवृत्तियों की लय भी कहते हैं।

(9) मनोवृत्तियों में अन्तर्सम्बद्धता होती है (Inter-connection in attitude) →

फरगूसन ने अपने अध्ययन के आधार पर स्पष्ट किया है कि व्यक्ति की कोई भी मनोवृत्ति पूरी तरह से पृथक और स्वतंत्र नहीं होती। इन मनोवृत्तियों के बीच एक अन्तर्सम्बन्ध होता है। यद्यपि इस अन्तर्सम्बन्ध की मात्रा विभिन्न दशाओं में भिन्न-भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए जो अनुकूल अथवा प्रतिकूल मनोवृत्तियाँ वैयक्तिक अथवा पारिवारिक जीवन को प्रभावित करती हैं, व्यवहार के अन्य क्षेत्र में भी, व्यक्ति लगभग उसी प्रकार की मनोवृत्तियाँ अर्जित कर लेता है। इसके बाद भी यह सम्भव है कि विभिन्न क्षेत्रों में यह अन्तर्सम्बद्धता अलग-अलग मात्रा में हो।